प्रातः सभा 14/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बच्चे यहाँ बैठे किसको याद करते हैं? अपने बेहद के बाप को। वह कहाँ है? उनको पुकारा जाता है ना हे! पतित–पावन..... आजकल सन्यासी भी कहते हैं पतित,–पावन सीता राम अर्थात् हम पतितों को पावन बनाने वाले आओ। यह तो बच्चे समझते हैं पावन दुनियाँ नई दुनियाँ को, पतित पुरानी दुनियाँ को कहा जाता है। अभी तुम कहाँ बैठे हो। कलियुग के अन्त में है। इसलिये पुकारते हैं बाबा आकर हमको पतित से पावन बनाओ। हम कौन? अहम् आत्मा। आत्मा को ही पवित्र बनना है। आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित है। यह शरीर तो मिट्टी का पुतला है। आत्मा तो अविनाशी है। आत्मा इन आरगन्स द्वारा कहती है, पुकारती है–हम पतित बन गये हैं, हमको आकर पावन बनाओ। बाप पावन बनाते हैं, 5 विकारों रूपी रावण पतित बनाती है। पावन सतयुग को, पतित कलियुग को कहा जाता है। अभी तुमको बाप ने स्मृति दिलाई है तो तुम पावन थे फिर ऐसे 84 जन्म लिये हैं अभी बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में हो। 84 जन्म पूरे हुए हैं। यह जो मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है, बाप कहते हैं मैं इनका बीज रूप हूँ। मुझे बुलाते हैं हे! परमपिता, ओ गॉड फादर, लिब्रेटर भी और गाइड भी। हरेक अपने लिये कहते हैं–मुझे दुःख से लिबरेट भी करो और पण्डा बन घर भी ले चलो। सन्यासी आदि भी कहते हैं स्थायी शांति कैसे मिले। अभी शान्तिधाम तो है मूलवतन। जहाँ से फिर आत्माएँ पार्ट बजाने आती हैं। वहाँ सिर्फ़ आत्माएँ हैं, शरीर नहीं हैं। आत्मा नंगी अर्थात् बिगर शरीर रहती है। नंगन का अर्थ यह नहीं है कपड़े पहनने बिगर रहना। नहीं। शरीर बिगर आत्माएँ नंगी रहती हैं। उन नागों ने फिर उल्टा उठाया है जो बिगर कपड़े नंगे आते हैं कुम्भ के मेले आदि पर। बाप कहते हैं बच्चे तुम आत्माएँ वहाँ मूलवतन में बिगर शरीर रहते हो। वह है शान्तिधाम अथवा निराकारी दुनियाँ। जहाँ आत्माएँ रहती हैं। बच्चों को सीढ़ी पर भी समझाया है। कैसे हम सीढ़ी नीचे उतरते आये हैं। 84 जन्म लगे हैं। यह 84 जन्म हैं मैक्सिमम। फिर कोई एक जन्म भी लेते हैं। एक से 84 तक। आत्माएँ ऊपर से आती ही रहती हैं। अभी बाप कहते हैं मैं आया हूँ पावन बनाने। बच्चे चिट्ठी लिखते हैं तो भी एड्रेस लिखते हैं शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा बाबा। शिवबाबा है आत्माओं का बाप और ब्रह्मा को कहा जाता है आदिदेव, एडम दादा। दादा में बाप आते हैं। कहते हैं तुमने मुझे बुलाया है हे! पतित–पावन आओ। आत्माओं ने इस शरीर द्वारा बुलाया है। मुख्य तो आत्मा है ना। यह है ही दुःखधाम। यहाँ देखो तो बैठे2 अकाले मृत्यु भी हो जाती है। छोटे बच्चे भी मर पड़ते हैं। सतयुग में अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। यहाँ तो बैठे–2 मर जाते हैं। वहाँ ऐसी कोई बीमारी नहीं होती। नाम ही है स्वर्ग। कितना अच्छा नाम है। नाम सुनने से ही दिल खुश हो जाती है। सतयुग हेविन, पैराडाइज। क्रिश्चियन भी कहते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज था। यहाँ भारतवासियों को तो यह भी पता नहीं। क्योंकि इन्होंने सुख बहुत देखा है तो दुःख भी बहुत देख रहे हैं। तमोप्रधान बने हैं। 84 जन्म भी इन्हों के ही हैं। आधा कल्प बाद फिर और धर्म वाले आते हैं। अभी तुम समझते हो आधा कल्प देवी–देवताएँ थे और कोई धर्म नहीं था। फिर त्रेता में रामराज्य हुआ तो इस्लामी, बौद्धी नहीं थे। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। कह देते दुनियाँ की आयु लाखों वर्ष है। कल्प की आयु कितनी लम्बी चौड़ी कर दी है। इसलिए मनुष्य समझते हैं कलियुग तो अजुन छोटा बच्चा है। तुम अभी समझते हो कलियुग की आयु पूरी हुई है। फिर सतयुग में आवेंगे इसलिये तुम आये हो बाप से स्वर्ग का वरसा लेने। तुम सभी स्वर्गवासी थे। बाप आते ही हैं स्वर्ग स्थापन करने। बाकी सभी शान्तिधाम घर में चले जाते हैं। वह है स्वीटहोम। हम आत्माएँ हैं वहाँ सायलेन्स में निवास करते हैं। फिर यहाँ आकर पार्टधारी बनते हैं। शरीर बिगर तो आत्मा बोल न सके। वहाँ शरीर न होने कारण आत्मा शान्त रहती है। उनको शान्तिधाम, मूलवतन कहा जाता है। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्र तो मनुष्य ने बनाई है। सतयुग में यह होती ही नहीं। भक्ति ही नहीं करते इसलिये शास्त्रों की भी दरकार नहीं रहती। देवताएँ भक्ति करते ही नहीं। बाद में फिर

देवताओं की भक्ति मनुष्य करते हैं। वह है ही देवताओं की दुनियाँ। यह है मनुष्यों की दुनियाँ। आधा कल्प है देवी–देवताएँ सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी। फिर द्वापर–कलियुग में होते हैं मनुष्य। देवताओं का राज्य था। अभी नहीं है। कहाँ गये किसको पता नहीं। इन ल0ना0 का राज्य था ना। स्वर्ग के मालिक थे। फिर राम सीता त्रेता के थे। इन्हों की डिनायस्टी थी। यह नालेज अभी तुमको मिलती है और कोई मनुष्य में यह नालेज होती ही नहीं। बाप ही आकर मनुष्यों को यह नालेज देते हैं। जिससे मनुष्य से देवता बनते हैं। तुम यहाँ आते ही हो मनुष्य से देवता बनने। देवताएँ कब अशुद्ध खान–पान, बीड़ी आदि नहीं पीते हैं। वह हैं देवताएँ। यहाँ सभी हैं मनुष्य। वह पावन यह पतित। वह है वैष्णव अर्थात् विष्णु की डिनायस्टी। विष्णु अर्थात् ल0ना0 कम्बाइन्ड। सतयुग–त्रेता में देवी–देवताएँ थे। फिर 84 जन्म लिये। बाप आत्माओं में बैठ बात करते हैं। आत्मा ही सुनती है इन आरगन्स द्वारा। शास्त्रों में यह बातें नहीं हैं। शास्त्र सभी हैं भक्ति के। ज्ञान का शास्त्र तो होता ही नहीं। द्वापर कलियुग में है भक्ति। आधा कल्प सुखधाम, आधा कल्प है दुःखधाम। सतयुग में रावण होता ही नहीं। दुःख का नाम नहीं। फिर आहिस्ते2 दुःख शुरू होता है। फिर भी तुम्हारे पास अथाह धन मिलता है। भक्ति मार्ग में तुम मंदिर बनाते हो। कितना धन रहता है तुम्हारे पास। पहले2 होता है सोमनाथ का मंदिर। बहुत मिलकियत थी। बड़े2 हीरे–जवाहर थे तुम्हारे पास। उनकी कीमत नहीं कह सकते। मुख्य है सोमनाथ का मंदिर; परन्तु राजाएँ तो सभी अपना2 मंदिर बनाते होंगे ना। क्योंकि उन्हों को पूजा करनी होती है। पूजा पहले2 होती है शिव की। सोमनाथ भी शिव को ही कहा जाता है। सोमनाथ अर्थात् सोमरस पिलाने वाला। ज्ञान अमृत है ना। तो बाप बैठ समझाते हैं यह भारत पहले सच्च खण्ड था। सच्च बाप का स्थापन किया हुआ होगा। बाप को ही ट्रुथ कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं आकर इस भारत को सच्च खण्ड बनाता हूँ। तुम सच्च देवताएँ कैसे बन सकते हो वह भी तुमको सिखलाता हूँ। कितने बच्चे यहाँ आते हैं। बहुत आते हैं। इसलिए मकान बनते रहते हैं। बनते रहेंगे। बहुत बनेंगे। मकान खरीद भी करते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कार्य करते हैं। ब्रह्मा हो गया सांवरा क्योंकि यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। यह फिर गोरा बनेगा। कृष्ण का भी चित्र गोरा और सांवरा है ना। म्युजियम में बड़े अच्छे2 चित्र हैं। जिस पर तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। यहाँ बाबा म्युजियम नहीं बनाते हैं, इनको कहा ही जाता है टावर ऑफ सायलेन्स। तुम जानते हो हम शान्तिधाम अपने घर जाते हैं। हम वहाँ के रहने वाले हैं। फिर यहाँ शरीर ले पार्ट बजाते हैं। पहले2 बच्चों को तो यह निश्चय होना चाहिए कि यह कोई साधु सन्त नहीं पढ़ाते हैं। यह तो सिन्ध के रहने वाला था; परन्तु इसमें जो प्रवेश कर बोलते हैं वह है ज्ञान का सागर। उनको कोई जानते ही नहीं। कहते भी हैं गॉड फादर; परन्तु रूप–देश काल क्या है यह कोई भी नहीं जानते हैं। शास्त्रों में दिखाया है उनका नाम–रूप, देश–काल यह नहीं है। वह निराकार है। उनका कोई आकार नहीं। फिर कह देते हैं वह सर्वव्यापी है। अरे, परमात्मा कहाँ है? कहेंगे वह तो घट–घट के वासी हैं। सभी के अन्दर हैं। अभी हरेक के घट–घट में तो हरेक की आत्मा बैठी हुई है। सभी भाई2 हैं ना। घट2 में परमात्मा फिर कहाँ से आया? ऐसे भी नहीं कि परमात्मा भी है आत्मा भी है। परमात्मा बाप को तो बुलाते हैं आकर हम पतितों को पावन बनाओ। मुझे तुम बुलाते हो यह धंधा यह सेवा करने लिये। हम छी छी को आकर शुद्ध बनाओ। पतित दुनियाँ में हमको निमंत्रण देते हो। कहते हो बाबा हम पतित हैं। बाबा तो पावन दुनियाँ देखते ही नहीं। पतित दुनियाँ में ही तुम्हारी सेवा करने आये हैं। अभी यह रावण राज्य विनाश हो जावेगा। बाकी तुम जो राजयोग सीखते हो वह जाकर राजाओं का राजा बनते हैं। तुमको अनगिनत बार पढ़ाया है फिर 5000 वर्ष बाद तुमको ही पढ़ावेंगे। सतयुग–त्रेता की राजधानी अभी स्थापन हो रही है। पहले2 है ब्राह्मण कुल। प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया जाता है। जिसको एडम आदिदेव कहते हैं। यह कोई को भी पता नहीं हैं। बहुत हैं जो यहाँ आकर सुनकर फिर माया वश हो जाते हैं। पुण्यात्मा बनते पापात्मा बन जाते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। यहाँ कोई भी पवित्र आत्मा पुण्यात्मा है नहीं। पवित्र आत्माएँ देवी–देवताएँ ही थे। जब सभी पतित बन जाते हैं तब बाप

को बुलाते हैं। अभी है रावण राज्य। पतित दुनियाँ। इनको कहा ही जाता है कांटों का जंगल। सतयुग है गार्डन ऑफ फ्लॉवर्स। मुगलगार्डेन में कितने फर्स्ट क्लास अच्छे2 फूल होते हैं। अक के भी फूल मिलेंगे; परन्तु उनका अर्थ नहीं समझते हैं। शिव के ऊपर अक क्यों चढ़ाते हैं। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। मैं जब पढ़ाता हूँ तो उनमें कोई फर्स्ट क्लास फूल हैं, कोई मोतिये का, कोई रतनजीत का, कोई अक भी हैं। नम्बरवार हैं ना। तो इनको कहा ही जाता है दुःखधाम। मृत्युलोक। सतयुग है अमरलोक। अभी तो यह नर्क है। फिर स्वर्ग बन रहा है। नई दुनियाँ स्वर्ग बनाने वाला है ही बाप। उनको ही नालेजफुल कहा जाता है। वह चैतन्य बीजरूप है। उनको ज्ञान का सागर भी कहा जाता है। ऐसे नहीं कि सभी के अन्दर को जानते हैं। अन्तर्यामी है। यह मनुष्य झूठ बोलते हैं। बाकी ज्ञान सागर ठीक है। चैतन्य बीजरूप है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। इसलिये उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तुम बच्चों को दे रहे हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। यह चक्र फिरता रहता है। संगम पर ही दुनियाँ चेंज होती है। अभी तुम संगमयुग पर खड़े हो और तुम राजयोगी हो। बाप बैठ पढ़ाते हैं। जो बाप के बच्चे बनते हैं वह राजयोग सीखते हैं। पहले2 मुख्य बात यह समझने की है बाबा बाबा भी है, फिर सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है। अभी तुमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। वह तुम्हारा सद्गुरु भी है। तुम सभी को वापस ले जावेंगे। जिसको शिव की बारात कहा जाता है। सभी भक्तों को भगवान आकर पढ़ाकर स्वर्गवासी बना देते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्र तो इस दादा ने बहुत ही पढ़ी है। बाप नहीं पढ़ते हैं। बाप तो खुद सद्गति दाता है। उनको तो कोई शास्त्र पढ़ने की दरकार ही नहीं। करने रिफर करते हैं सो भी सिर्फ़ गीता को। सर्वशास्त्रमई गीता भगवान ने गाई है; परन्तु भगवान किसको कहा जाता यह भारतवासी नहीं जानते। बाप को सर्वव्यापी कह देते हैं। यह तो जैसे कि डिफेम करते हैं। बाप की इनसल्ट करते हैं। इसलिये पतित बन जाते हैं। फिर पावन कौन बनावे। जिसको इतना डिफेम किया है ..... आकर पावन बनाते हैं। कहते हैं मैं निष्काम सेवा करता हूँ। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, मैं नहीं बनता हूँ। स्वर्ग में तुम मुझे याद नहीं करते हो। दुःख में सुमिरण सभी करे सुख में करे न कोय। इनको दुःख और सुख का खेल कहा जाता है। स्वर्ग में और कोई धर्म होता ही नहीं। वह सभी आते ही हैं बाद में। क्रिश्चियन लोग खुद कहते हैं 3000 वर्ष पहले स्वर्ग था और कोई धर्म न था। हम आत्माएँ शान्तिधाम में थीं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्रों से तो दुर्गति होती है। उनमें भी मुख्य है गीता। बाप इस ज्ञान से सद्गति करते हैं। जिसका नाम गीता रखा है। जो द्वापर से पढ़ते2 तुमने दुःख ही पाया है। वह फिर कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। ठिक्कर भित्तर में है। इतनी बाप की इनसल्ट करते हैं तो पतित बन जाते हैं, फिर मौत ही सजा मिल जाती है। बाप को बुलाते हैं कि आकर मौत की सजा दो। यहाँ से स्वर्ग में ले जाओ। तो पुरानी दुनियाँ का विनाश हो जावेगा। नेचरल कैलेमिटीज, तूफान आवेंगे जोर से। खेती वारी सभी जल जावेगा। सूरत में क्या हाल हुआ। सभी खत्म हो गये। कितना नुक़सान हुआ, गिनती कर न सके। पैसे आदि सभी पानी में चले गये। तो बाप आकर बेसमझ को समझदार बनाते हैं। बाप कहते हैं हमने तुमको कितना धन दिया था। अनगिनत धन दिया था। फिर इतना सभी कहाँ गवाँया। बेहद का बाप पूछते हैं कहाँ किया? अभी कितने इनसालवेन्ट बन गये हैं। आधा कल्प से गँवाते2 इनसालवेन्ट बन पड़े हो। भारत जो सोने की चिड़िया थी सो अभी क्या बन गई है। अभी फिर पतित पावन बाप आया हुआ है। राजयोग सिखा रहे हैं। वह है हठयोग। यह है राजयोग। यह राजयोग दोनों के लिये है। वह हठयोग है सिर्फ़ पुरूषों के लिये। बाप कहते हैं पुरूषार्थ कर स्वर्ग का मालिक बनकर दिखाना है। इस पुरानी दुनियाँ का तो विनाश होना ही है। बाकी आठ वर्ष हैं। फिर लिखेंगे सात वर्ष/6 वर्ष। लड़ाइयाँ भी शुरू हो जावेंगी। एटॉमिक बॉम्ब्स शुरू ही तब करेंगे जब तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होगी और स्वर्ग में जाने के लायक बनेंगे। तब तक बनाते रहेंगे। बाप फिर भी बच्चों को कहते हैं याद की यात्रा करते रहो। इसमें ही माया बहुत विघ्न डालती है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।